B.ed 1st year . Paper - C2 , Unit - 3

Page - 1

जॉन डीवी (Johan Dewey)

जीवन परिचय : आधुनिक शिक्षा में समाजवाद के प्रवर्तक जॉन डिवी थे। जॉन डिवी को प्रयोजनवादी दार्शनिक के प्रवर्तक के रूप में जाना जाता है। जॉन डीवी का जन्म 1859 ई० में संयुक्त राज्य अमेरिका में बर्लिंगटन में हुआ था। विद्यालयी शिक्षा बर्लिंगटन के सरकारी विद्यालय में हुआ। इसके उपरांत जॉन डीवी वर्मोन्ट विश्वविद्यालय में अध्ययन किये। जॉन हापकिन्स विश्वविद्यालय में उन्हें PHD की उपाधि मिली। जॉन डिवी कान्ट के विचारो से काफी प्रभावित थे। Ph.D करने के पश्चात उनकी बहाली मिन्सोटा विश्वविद्यालय में व्याख्याता के पद पर हुई। कुछ वर्षो तक कार्य करने के पश्चात उन्होंने सन् 1896 ई० में स्वयं एक स्कूल की स्थापना की जिसे प्रयोगात्मक स्कूल बोला गया। इस विद्यालय का सारा क्रियाकलाप प्रयोग अर्थात क्रियाशीलता पर आधारित था। इसके अतिरिक्त जॉन डीवी ने अनेक पुस्तकों की भी रचना की।

जॉन डीवी की शिक्षा सम्बन्धी रचनाएँ :

Democratic and Education.
How we think.
Schools of tomorrow. e.t.c

डीवी का दार्शनिक विचार :

डीवी मूल्यों को शाश्वत नहीं मानते यथार्थ भी इनके लिए परिवर्तनशील है। सत्य वही है जो व्यवहार की कसौटी पर खरा उतरे। दर्शन सभी ज्ञान की शाखाओं का सामान्यीकरण है। शिक्षा को परिभाषित करते हुए उन्होंने कहा "शिक्षा अनुभवों की सतत पुनर्रचना है।" शिक्षा के प्रति उनके मुख्य अवधारणा उनकी पुस्तकें जैसे - "डेमोक्रेसी एण्ड एजुकेशन" (1938) में लिखी गई है। उनके अनुसार सत्य एक उपकरण है जिसका उपयोग मनुष्य द्वारा अपनी समस्याओं का समाधान करने के लिए किया जाता है। जब समस्याएँ बदलती हैं, सत्य परिवर्तनशील है तथा शाश्वत सत्य नहीं हो सकता है। डीवी के अनुसार परिवर्तन शिक्षा का मौलिक सिद्धान्त है। सत्य व्यक्ति के अनुसार बदलते रहता है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मानव जीवन को समृद्ध एवं सुखी बनाना है। अतः जॉन डीवी को व्यवहारवादी विचारक कहा जाता है।

शिक्षा का उद्देश्य
(Object of Education)

डीवी ने जो शिक्षा के उद्देश्य निर्धारित किये है वे इस प्रकार है

उद्देश्य

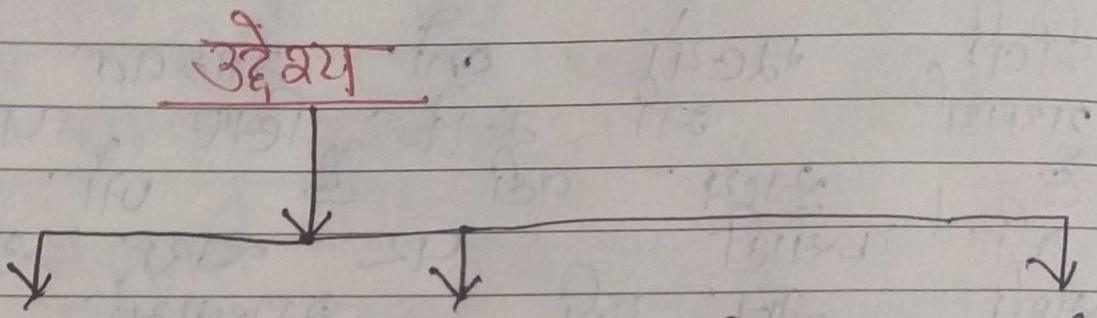

- बच्चे का विकास
- प्रजातांत्रिक व्यक्ति एवं समाज का सृजन
- भावी जीवन की तैयारी

① **बच्चे का विकास** :- शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है बच्चों की शक्ति एवं क्षमता का विकास। प्रत्येक बच्चे की अपनी विशेष क्षमता होती है। एक ही प्रकार के विकास का सिद्धान्त लागू करना व्यर्थ है क्योंकि एक बच्चे का विकास दूसरे से अलग होता है। बच्चे की क्षमता के अनुसार अध्यापक को विकास की दिशा देनी चाहिए।

2.) प्रजातांत्रिक व्यक्ति एवं समाज का सृजन।

प्रयोजनवादी शिक्षा का लक्ष्य है व्यक्ति में प्रजातांत्रिक मूल्य एवं उद्देश्य को आदर्शों को भरना, प्रजातांत्रिक समाज की रचना करना। जिससे व्यक्ति-व्यक्ति में भिन्नता न हो। प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र हो तथा एक दूसरे का सहयोग करने को तत्पर रहे।

3.) भावी जीवन की तैयारी : प्रयोजनवादी शिक्षा इस अर्थ में उपयोगी है कि यह व्यक्ति को भावी जीवन हेतु तैयार करता है ताकि वह अपनी आवश्यकताओं को पूरा कर आत्मसंतोष प्राप्त कर सके। भावी जीवन की शिक्षा व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन हेतु तैयारी करती है।

पाठ्यक्रम (Curriculum)

डीवी के अनुसार शिक्षा प्रक्रिया के दो पक्ष है-

शिक्षा प्रक्रिया के पक्ष

(i) मनोवैज्ञानिक पक्ष
(ii) सामाजिक पक्ष

Page-5

i.) मनोवैज्ञानिक पक्ष — बच्चे की रुचि एवं क्षमता के अनुसार पाठ्यचर्या एवं शिक्षण विधि निर्धारित किए जाने चाहिए। बच्चे की रुचि को जानने के उपरांत शिक्षा दी जानी चाहिए —

ii) सामाजिक पक्ष — शिक्षा की शुरुआत व्यक्ति द्वारा जाति की सामूहिक चेतना में भाग लेने से होती है। अतः विद्यालय का ऐसा वातावरण होना चाहिए कि बच्चा समूह की सामाजिक चेतना में भाग ले सके यह उसके व्यवहार में सुधार लाता है। और व्यक्तित्व तथा क्षमता में विकास कर उसकी सामाजिक कुशलता बढ़ाता है।

पाठ्यक्रम के सिद्धान्त

ड्यूवी ने पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय निम्न बातों को ध्यान में रखा।

1.) पाठ्यचर्या बालक एवं समाज केन्द्रित हो।

ii) पाठ्यचर्या बच्चों की रुचि पर आधारित हो

iii) पाठ्यचर्या उपयोगी होनी चाहिए।

iv) पाठ्यचर्या वास्तविक जीवन की क्रियाओं पर आधारित हो।

v) पाठ्यचर्या लचीला हो।

शिक्षण विधि (Teaching method)

जॉन डीवी अपनी शिक्षण विधि में निम्न पक्षों पर जोर दिया।

शिक्षण विधि

1. **करके सीखना** :- अगर बच्चा स्वयं करके कोई विषय सीखता है तो वह सीखना अधिक प्रभाव शाली होता है।

2. **एकीकरण** :- बच्चे के जीवन उसकी क्रियाओं एवं पढ़े जाने वाले विषयों में समरूपता हो सभी विषयों को उसकी क्रियाओं के इर्द-गिर्द जिससे की बच्चे अभ्यस्त रहे।

3. **बाल केन्द्रित पद्धति** :- बच्चे की रुचि के अनुसार शिक्षा दी जानी चाहिए।

4. **योजना पद्धति** :- इससे छात्र में उत्साह, आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, सहयोग तथा सामाजिक भाव का विकास होता है।

OCTOBER

M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S
	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31										

विद्यालय (School) :- डीवी ने प्रचलित विद्यालय को दोषपूर्ण बताया है उसमें पुस्तकीय ज्ञान पर बल दिया जाता है जिसके फलस्वरूप बालक के व्यक्तित्व का दमन होता है। उन्होंने एक ऐसे विद्यालय का निर्माण किया जिसमें विषयों का क्रमबद्ध एवं विशिष्ट ज्ञान क्रिया द्वारा प्रदान किया जाता है।

अनुशासन (discipline) :- समाजोन्मुखी शिक्षा में बालक के सहयोग द्वारा तथा स्कूल के कार्यों द्वारा उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करके हम उसमें आज्ञापालन, अनुशासन, नियम आदि आवश्यक बातों को चरित्र निर्माण का अंग बना सकते हैं, सहयोग, चरित्र और रुचि पर आधारित शिक्षा में अनुशासन को भंग होने की आशंका ही नहीं है। बल का प्रयोग अनुचित है।

निष्कर्ष (conclusion) :- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि आज हम जिन नवीन विचारों एवं प्रणालियों अर्थात नवीन शिक्षा, प्रगतिशील शिक्षा, क्रियात्मक विद्यालय तथा संशोधित रिकार्ड आदि को देखते हैं ये सब डीवी के विचारों की ही देन है।